एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 03, अंक: 04 (जुलाई-अगस्त, 2023)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

वर्ष भर हरा चारा एवं पशुओं में हरे चारे का महत्व

(*मनीष कुमार दुरिया एवं भरत कुमार)
श्रीनाथजी कृषि महाविद्यालय, नाथद्वारा
*संवादी लेखक का ईमेल पता: manishduria@gmail.com

पशुधन कृषि में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। भारतीय कृषि के राष्ट्रीय सकल घरेलू उत्पाद में पशुधन क्षेत्र का योगदान 25.60 प्रतिशत है। 20वीं पशुधन गणना 2019 के अनुसार भारत में कुल पशुधन संख्या 535.78 मिलियन बताई गई। हालाँकि, 2012 से 2019 तक पशुधन जनगणना के आंकड़ों में कुल पशुधन आबादी में 4.60 प्रतिशत की वृद्धि देखी गई है। हरा चारा फसलें पशुधन के लिए पोषक तत्वों का आर्थिक स्रोत हैं। पशुपालन पर होने वाली कुल लागत का लगभग 60-70 प्रतिशत व्यय पशु आहार पर होता है। इसलिए पशुपालन व्यवसाय (डेयरी फार्मिंग) की सफलता काफी हद तक उच्च पोषण युक्त आहार के खर्च पर निर्भर करती है। भारत में गुणवत्तापूर्ण हरे चारे की आपूर्ति बेहद अनिश्चित है और मांग के मुकाबले अंतर बहुत बड़ा है। भारत के योजना आयोग के अनुसार वर्ष 2015 में देश में 1097 मिलियन टन हरे एवं 609 मिलियन टन सूखे चारे की अनुमानित मांग थी जबकि 395.2 मिलियन टन हरा चारा और 451 मिलियन टन सूखे चारे की आपूर्ति हो सकी थी। इस प्रकार देश में हरे चारे की 63.50 प्रतिशत और सूखे चारे की 23.56 प्रतिशत की कमी है।

पशुओं के प्रजनन, शारीरिक विकास तथा दूध उत्पादन हेतु आवश्यक पोषक तत्वों को उचित अनुपात में देना अत्यन्त आवश्यक है। पशुओं से दूध एवं मांस का अधिक उत्पादन तथा उत्तम स्वास्थ्य रहे उसके लिए उनके आहार में वर्ष भर हरे चारे को शामिल करे। । हरे चारे पशुओं के आहार में विशेष महत्व रखते हैं इनके पोषक तत्व रातब (दाना) की अपेक्षा अधिक सस्ते प्राप्त होते हैं। हरे चारे मुलायम व स्वादिष्ट होने के साथ-साथ सुपाच्य भी होते हैं। इसके अलावा इनमें विभिन्न पौषक तत्व भी पर्याप्त मात्रा में होते हैं। जिससे पशुओं की दूध उत्पादन क्षमता में वृद्धि होती है। हरे चारे से पशुओं को हरे चारे से विटामिन ए का मुख्य तत्व केरोटिन काफी मात्रा में मिल जाता है। किसान अपने पशुओं को वर्ष के कुछ ही महीनों तक हरा चारा खिला पाते हैं इसका प्रमुख कारण यह है कि वर्ष भर हरा चारा उत्पादित नहीं कर पाते। पशुओं को साल भर हरे चारे खिलाने के लिए हरे चारे एवं घासें फॉर्म पर उपलब्ध हो ताकि इनको बाहर से खरीदने की आवश्यकता ना पड़े जिससे चारा फसलो का अधिक तथा लगातार उत्पादन हो सके। हरे चारा फसलों के लगातार उत्पादन के लिए पशु पालको को उन्नत किस्मों का उपयोग, उन्नत कृषि तकनीक, आवश्यक जल प्रबन्ध व पौध संरक्षण उपाय भी अपनाना चाहिए साथ ही ऐसी उन्नत किस्मो का प्रयोग करना चाहिए जो सूखे को सहन कर सकती हो। भारत देश में पशुओं का पोषण मुख्य रूप से कृषि उपज तथा फसलों के चक्र पर निर्भर करता है।

पशुपालक को सिंचाई के उचित साधन को ध्यान में रखकर ही फसल चक्र बनाना चाहिए।

i. प्रथम वर्ष खरीफ में ज्वार रबी के मौसम में बरसीम।
ii. द्वितीय वर्ष खरीफ में मक्का तथा रबी के मौसम में बरसीम।

iii. ज्वार खरीफ में तथा रबी में जई ली जा सकती है।
iv. बाजरा खरीफ में तथा मटर एवं जई रबी के मौसम में।
v. नेपियर घास दो वर्ष तक एक ही खेत में ली जा सकती है।

पशुपालक बहुवर्षीय घासों (नैपियर घास, संकर नैपियर घास, सुडान घास) को लगाकर वर्ष भर हरा चारा पैदा कर सकते है। क्यों की बहुवर्षीय घासों को एक बार लगाने के बाद प्रति वर्ष निरंतर उत्पादन लिया जा सकता हैं। हरे चारे दुधारू पशुओं के लिए अत्यंत पौष्टिक तथा स्वास्थ्य वर्धक होते हैं।

हाइब्रिड नेपियर घास एक बहुवर्षीय चारा फसल है। इसे हर प्रकार की जलवायु एवं मिट्टी में उगाया जा सकता है। किसानों और बाजरा नेपियर हाइब्रिड (हाइब्रिड नेपियर) बहुवर्षीय चारा फसल है इसको लगाने से पशुओं को वर्ष भर हरा चारा मिलता रहेगा। इस घास को किसी भी प्रकार की मिट्टी एवं जलवायु में उगाया जा सकता है। जिन किसानों के पास सिंचाई के साधन है वह वर्षभर पशुओं के लिए पौष्टिक हरा चारा उत्पादित कर सकते हैं। पशु पालकों के लिए यह एक बेहतर पशु चारा विकल्प है। इसकी उन्नत किस्में सी.ओ.-5 एवं सी.ओ.-4 ज्यादा उपयोगी हैं। इसे खरीफ एवं रबी मौसम में लगा सकते हैं। इसे उगाने के लिए इसका तना या रूट स्लिपस काम में ली जाती है यह उच्च पोषक मान की वजह से व्यापक रूप से हरा चारा के रूप में पसंद किया जा रहा है। इसमें क्रूड प्रोटीन 14-15 प्रतिशत और शुष्क पदार्थ 22 प्रतिशत है। इसे एक बार बोने पर 4-5 वर्ष तक सफलतापूर्वक हरा चारा उत्पादन किया जा सकता है। इस घास की पाचन क्षमता 60% के करीब है। यह चारा दुधारू पशुओं के लिए काफी लाभदायक है।

विभिन्न महीनों में उपलब्ध हरे चारों की सूची

महीना	उपलब्ध हरा चारा
जनवरी	बरसीम, रिजका, जई, मटर, मेथी, सरसों एवं सेंजी
फरवरी	बरसीम, रिजका, जई, मटर, नैपियर घास, संकर नैपियर घास एवं मेथी
मार्च	रिजका, बरसीम, नैपियर घास, सेंजी, लोबिया एवं मूंग
अप्रैल	बरसीम, रिजका, नैपियर घास, संकर नैपियर घास, ज्वार, दीनानाथ घास, बाजरा, मक्का, लोबिया, ग्वार एवं गिनी घास
मई	मक्का, ज्वार, बाजरा, दीनानाथ घास, नैपियर, संकर नैपियर, गिनी घास एवं लोबिया
जून	मक्का, ज्वार, बाजरा, नैपियर घास, संकर नैपियर, गिनी घास, ग्वार,लोबिया एवं मूंग
जुलाई	ज्वार, मक्का, बाजरा, लोबिया, ग्वार, नैपियर घास एवं गिनी घास
अगस्त	मक्का, ज्वार, बाजरा, दीनानाथ घास, नैपियर घास, संकर नैपियर, गिनी घास, लोबिया एवं सुडान घास
सितम्बर	ज्वार, ग्वार, लोबिया, अरहर, नैपियर घास, संकर नैपियर, सुडान घास एवं बाजरा
अक्टूबर	ज्वार, ग्वार, बाजरा, अरहर, नैपियर घास, संकर नैपियर, सुडान घास एवं लोबिया
नवम्बर	नैपियर घास, संकर नैपियर, सुडान घास, गिनी घास, मक्का एवं ज्वार
दिसम्बर	बरसीम, रिजका, जई, नैपियर घास, संकर नैपियर, सरसों एवं सूडान घास

वर्ष भर उपलब्ध हरे चारे बोने एवं काटने का समय

चारा फसल	बोने का समय	चारे की उपलब्धता / काटने का समय
बरसीम	अंतिम सप्ताह सितम्बर	जनवरी से अप्रैल
रिजका	अक्टूबर से नवम्बर	जनवरी से जून
मेथी	अक्टूबर से नवम्बर	जनवरी से अप्रैल
सेंजी	अक्टूबर से नवम्बर	जनवरी से अप्रैल
जई	अक्टूबर से नवम्बर	जनवरी से अप्रैल
हरी सरसों	अक्टूबर से नवम्बर	जनवरी से अप्रैल
अगेती मक्का	अंतिम सप्ताह फरवरी	अंतिम सप्ताह अप्रैल
अगेती ज्वार	अंतिम सप्ताह फरवरी	अंतिम सप्ताह अप्रैल
अगेती लोबिया	अंतिम सप्ताह फरवरी	अंतिम सप्ताह अप्रैल
अगेती ग्वार	अंतिम सप्ताह फरवरी	अंतिम सप्ताह अप्रैल
अगेती बाजरा	अंतिम सप्ताह फरवरी	अंतिम सप्ताह अप्रैल
मक्का	अंतिम सप्ताह जून	अंतिम सप्ताह अगुस्त
ज्वार	अंतिम सप्ताह जून	अंतिम सप्ताह अगुस्त
लोबिया	अंतिम सप्ताह जून	अंतिम सप्ताह अगुस्त
सूडान घास	अप्रैल	वर्ष भर
ग्वार	अंतिम सप्ताह जून	अक्टूबर
नैपियर (हाथी घास)	फरवरी से सितम्बर	पूरे वर्ष
गिनी घास	मार्च से सितम्बर	पूरे वर्ष

हरे चारे का महत्व

1. हरे चारे में विभिन्न प्रकार के पोषक तत्व जैसे प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट, विटामिन एवं खनिज लवण उपयुक्त मात्रा में पाये जाते है।
2. हरा चारा मुलायम, स्वादिष्ट होने के साथ ही पाचनशील होता है जिससे पशुओं में पाचनशक्ति बढ़ जाती हैं।
3. दुधारू पशुओं को हरा चारा खिलाने से दूध की मात्रा बढ़ जाती है।
4. पशुओं को हरा चारा खिलाने से समय से गर्मी में आने लगते है जिससे गर्भ धारण करने की क्षमता भी बढ़ जाती है।
5. हरा चारा खिलाने से पशुओं के रक्त संचार में वृद्धि होती है।
6. हरे चारे में प्रचुर मात्रा में केरोटीन पाया जाता है। जो विटामिन ए का अपरूप है। जो पशुओं में अन्धेपन की बीमारी से मुक्ति दिलाता है।